बाल शोध–जानना खुद को

– अमनदीप कौर

बच्चों के साथ काम करते समय हमने सीखा कि किस प्रकार हम अपने आसपास होने वाली दैनिक क्रियाओं का उपयोग बच्चों को गणित सिखाने में भी कर सकते हैं। एक शिक्षिका के रूप में मेरे लिए यह एक नया अनुभव था। बच्चे स्वयं अपने अनुभवों के द्वारा कुछ नया सीखते हैं तो वह अधिक स्थायी होता है।

मुझे 11 अक्टूबर, 2017 को राजकीय इण्टर कॉलेज, गदरपुर में एक बाल–शोध मेले को देखने अवसर प्राप्त हुआ। मैंने वहां विभिन्न विषयों में बच्चों द्वारा किये गये काम पर उनसे बातचीत की। बातचीत के दौरान मैंने पाया कि बच्चों में गज़ब का उत्साह था। बच्चे बहुत ही आत्मविश्वास के साथ प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे। मुझे उनके द्वारा किये गये काम को देखकर अच्छा लगा। मैं समझना चाहती थी कि बच्चों में इतने उत्साह व आत्मविश्वास के पीछे कौन सी व कैसी प्रक्रियाएं काम करती हैं। इसीलिये जब मेरे पास बाल शोध मेले में प्रतिभाग करने का प्रस्ताव आया तो मैंने इसे अपने लिए सीखने–समझने के अवसर के तौर पर लिया और मैंने इसमें प्रतिभाग करने पर अपनी सहमति दी।

अब प्रश्न यह था कि इस पर आगे कैसे बढ़ा जाये, इसकी विषयवस्तु क्या हो और सबसे महत्वपूर्ण यह कि इसकी शुरुआत कहां से की जाये? चूंकि इस बाल शोध मेले में प्राथमिक विद्यालय, तिलपुरी न.–1 व मटकोटा के शिक्षक व बच्चे भी प्रतिभाग कर रहे थे, हमने मिलकर योजना बनाने पर विचार किया। योजना के क्रम में सर्वप्रथम इन दोनों विद्यालयों के शिक्षकों के साथ मिलकर एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें हमने 'बाल शोध' प्रक्रिया की अवधारणा पर साझी समझ बनाई। इस प्रक्रिया के लिए विषयवस्तु का चयन किया और इस मेले के आयोजन की तिथि व स्थान निर्धारित किया। चूंकि यह बाल शोध मेले की प्रक्रिया को जानने व समझने के उद्देश्य से किया जाना था। अतः हमें इसे एक निर्धारित समय सीमा में काम करके भी प्रस्तुत करना था। जिससे कि इस प्रक्रिया के महत्व और इसकी प्रभावशीलता को भी समझा जा सके। हमारे विद्यालय में आयोजित बाल शोध मेला की योजना बैठक में हमने विषयवस्तु चयन के क्रम में कक्षा पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन किया व उनमें परस्पर अंतर्संबंधों को समझा। इसके साथ ही हमने पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त विषयवस्तु सम्बन्धी एक सूची का भी अध्ययन कर विषयवस्तु का चयन किया।

चूंकि हम किसी ऐसी विषयवस्तु पर काम करना चाहते थे जिससे हम अपने विद्यालय में बच्चों की अनुपस्थिति व उनकी पढ़ने–लिखने में आ रही दिक्कतों की वजहों को समझ सकें। हमारे द्वारा यह देखा गया है कि विद्यालय में बहुत से बच्चे ऐसे हैं जो किसी कारणवश रोज विद्यालय नहीं आ पाते हैं। उन्हें अपने छोटे भाई–बहनों का ध्यान रखने के लिए अथवा अपने माता–पिता का अन्य कार्यों में हाथ बंटाने के लिए घर में ही रुकना पड़ता है जिससे उनकी विद्यालयी शिक्षा प्रभावित होती है। अतः हमारे लिए यह जरूरी था कि हम कोई ऐसी विषयवस्तु चुनें जिसमें बच्चों के घर–परिवार व समुदाय को करीब से समझा जा सके। साथ ही बच्चों को अपने परिवेश में जाकर लोगों से बात करने का अवसर मिल सके। इसके लिए हमने, 'महिलाओं की ज़िम्मेदारियां, उनकी दिनचर्या व बच्चों द्वारा घर व गांव में किये जाने वाले कार्य विषय का चयन किया।

यद्यपि यह विषयवस्तु प्राथमिक स्कूली पाठयक्रम से सीधे तौर पर जुड़ी नहीं है लेकिन पाठयचर्या व शिक्षा के लक्ष्यों से इसका गहरा जुड़ाव है। एनसीएफ–2005 का पहला सिद्धांत कहता है कि विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा का विद्यालय के बाहर के क्रियाकलापों के साथ जुड़ाव हो जिससे की बच्चों के अनुभवों व ज्ञान को कक्षा–कक्ष में

जगह मिले। वह स्वयं के प्रयासों द्वारा कुछ नया सीख पा रहा हो। बच्चे को ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में शामिल होने के अवसर मिलते रहें। जिससे उनमें आत्मविश्वास बढ़े और सीखने के प्रति रुचि जागृत हो। अर्थात शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक ही केन्द्रित होकर न रह जाये।

उपरोक्त विषयवस्तु पर काम करने के लिए हमने कक्षा 3, 4 व 5 के बच्चों को शामिल किया और उनसे इस विषय पर विस्तार से बातचीत की गयी जिसमें हमारे द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया कि बच्चों के घर परिवार की स्थिति कैसी है? उनके घर के आय के साधन क्या–क्या हैं? परिवार एकल हैं या संयुक्त? घरेलू काम किसके द्वारा किये जाते हैं? घर में छोटे भाई बहनों की देखभाल कौन करता है? बच्चों द्वारा घर के किन–किन कार्यों में मदद की जाती है? बच्चों द्वारा छुट्टियों का उपयोग कैसे किया जाता है? इत्यादि। बातचीत को आधार बनाते हुए मैंने बच्चों को दो–दो प्रश्न बनाने के लिए कहा। सभी बच्चे प्रश्न निर्माण के कार्य में जुट गये। बच्चे प्रश्न बनाकर मेरे पास ला रहे थे और मैं उनके प्रश्नों को अपनी नोटबुक में लिखती जा रही थी। इसके साथ–साथ मैं यह भी ध्यान रखती जा रही थी कि प्रश्नों में दोहराव ना हो ताकि नए प्रश्न आएं। बच्चों के लिए उनका हर प्रश्न एक नया प्रश्न था लेकिन कभी–कभी ऐसा भी हो रहा था कि उनके द्वारा बनाया प्रश्न पहले से ही 'प्रश्न सूची' में शामिल हो चुका होता। यह प्रक्रिया बच्चों को विभिन्न प्रकार के प्रश्न बनाने के लिए प्रेरित कर रही थी। इस पूरी प्रक्रिया में बच्चे बहुत ही उत्साहित होकर प्रतिभाग कर रहे थे और थोड़े समय में ही उनके पास प्रश्नों की एक लम्बी सूची बनकर तैयार हो गयी। उनके द्वारा बनाये गये सभी प्रश्न खुले प्रश्न थे मसलनः

1. जब मां जंगल में लकड़ी लेने जाती है तो घर में छोटे बच्चों की देखभाल कौन करता है ?
2. सुबह से लेकर शाम तक बच्चे घर में क्या–क्या काम करते हैं ?
3. आप अपने घर की साफ–सफाई कैसे करते हैं?
4. आप अपने बच्चों को कहां–कहां घुमाने लेकर जाते हैं?
5. आप अपने बच्चों की पढ़ाई में किस प्रकार से मद्द करते हैं?
6. आपके परिवार में कौन–कौन हैं?
7. आपके परिवार का खर्चा कैसे चलता है?
8. अगर आपका बच्चा स्कूल जाने से मना कर दे तो आप क्या कहते हैं?
9. आपके परिवार में कौन–कौन पढ़ा लिखा है?
10. आपके घर की महिलाएं क्या–क्या काम करती है?

बच्चों द्वारा ऐसे बहुत से प्रश्न बनाये गये। इसके पश्चात हमने बच्चों के साथ समुदाय में जाकर उनके द्वारा प्रश्नों पर लोगों से बातचीत करने को कहा। अगले दिन प्रश्नों के द्वारा संकलित की गयी जानकारी के आधार पर कक्षा–कक्ष में 'रिश्तों की समझ' पर बातचीत की गयी।

बच्चों के साथ काम के अगले चरण में हमने बच्चों से उनकी माँ द्वारा दिनभर में किये जा रहे कामों का अवलोकन कर उन्हें अपनी नोटबुक में दर्ज करने को कहा गया। ज्यादातर बच्चों ने इस अवलोकन को लिखा। जो बच्चे लिखकर नहीं लाये थे उन्हें अगले दिन लिखकर लाने को बोला गया। उनके अवलोकन को पढ़ने पर मैंने पाया कि उन सभी बच्चों के घर की परस्थितियां अलग अलग थी। कक्षा पांच के पंकज ने लिखा कि उसकी माँ सुबह चाय पीकर जंगल में लकड़ी काटने जाती है फिर आकर घर का काम जैसे झाड़ू लगाना, पशुओं की देखभाल करना व परिवार के लिए खाना बनाती हैं।

इसके साथ–साथ हमें यह भी समझना था कि घरों में बच्चे किन–किन कामों में शामिल रहते हैं? इसके लिए कक्षा–कक्ष में मैंने बच्चों के साथ इस विषय पर भी चर्चा की। उनसे पूछा गया कि वे छुट्टी के दिन घर में क्या–क्या करते हैं? बच्चों ने बताया कि वे छुट्टी के दिन घर के कामों में अपनी माँ की मदद करते हैं, खेलते हैं, पढ़ाई करते हैं और घूमने जाते हैं इत्यादि। अगला दिन रविवार था अतः मैंने बच्चों को दिन भर में उनके व उनकी माँ के द्वारा किये जा रहे सभी कामों के बारे में लिखकर लाने को कहा गया। फिर इस सारी जानकारी को बच्चों की सहायता से चार्ट्स के रूप में तैयार किया गया। इस प्रक्रिया के दौरान हमें यह पता चला कि बच्चे घर के

कामों में किस प्रकार से मदद करते हैं। इससे यह भी समझ में आता है कि बच्चे अपनी जिम्मेदारी को भली भांति समझते हैं तथा उनका निर्वहन करने की भी कोशिश करते हैं।

जब हम शिक्षा को कला के साथ जोड़ने की बात करते हैं तो यह केवल चित्रकला तक ही सीमित नहीं है। कला के और भी आयाम हैं जैसे– संगीत, नृत्य, तथा नाटक। इन सब के द्वारा भी कक्षा शिक्षण को और अधिक रोचक बनाया जा सकता है। क्योंकि हमारा यह विषय पूर्ण रूप से महिलाओं तथा बच्चों से संबंधित था। अतः अपनी बात को प्रभावशाली तथा रोचक तरीके से कम समय में दूसरों तक पहुंचाने के लिए नाटक एक उपयुक्त माध्यम लगा। इसलिए बच्चों के साथ मिलकर एक नाटक भी तैयार किया गया था। जिसका शीर्षक है "अदृश्य मेहनत"। इसके लिए सर्वप्रथम बच्चों के साथ इस नाटक के समस्त किरदारों पर बातचीत की गयी। प्रत्येक बच्चे को उसके द्वारा निभाए जाने वाले किरदार के बारे में बात हुई। इस नाटक में यह दिखाया गया कि किस प्रकार महिलाओं द्वारा दिन–रात मेहनत करके काम किया जाता है। फिर भी उनके द्वारा किये गये काम की कहीं कोई गिनती नही होती है। जैसे घर में रहने वाली एक महिला द्वारा घर के सभी काम किये जाते हैं परंतु यदि उससे यह पूछा जाये कि वह क्या करती है? तो उसका जवाब होता है "कुछ नहीं"। अतः इस प्रकार नाटक के द्वारा एक महिला द्वारा किये जाने वाले कार्यों को दर्शाया गया है।

क्योंकि बच्चों के द्वारा किया गया यह काम उनके पाठयक्रम से जुड़ा हुआ नहीं था इसलिये हमारा अगला उद्देश्य यह था कि इस कार्य को विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले विषयों जैसे– हमारे आसपास, भाषा तथा गणित इत्यादि के साथ किस प्रकार जोड़ा जाए? यदि सबसे पहले हमारे आस पास विषय पर बात की जाए तो जिस समय बच्चे अपने द्वारा बनाये गये प्रश्नों के उत्तर खोज रहे थे अथवा महिलाओं की दिनचर्या से सम्बंधित जानकारी एकत्र कर रहे थे तब कहीं न कहीं वह अपने परिवेश का ही अध्ययन कर रहे थे।

अब हमारा अगला उद्देश्य यह था कि इस प्रक्रिया का उपयोग बच्चों को गणित सिखाने में किस प्रकार किया जाये। इसके लिए सर्वप्रथम बच्चों से यह पूछा गया कि किसके घर में महिलाएं काम करने के लिए घर से बाहर जाती हैं। तथा क्या–क्या काम करती हैं? अधिकतर बच्चों का कहना था कि उनकी मां दिहाड़ी करने जाती हैं जैसे कि धान लगाना, मटर तोड़ना, रेता बजरी ढ़ोना, फसल कटाई के लिए जाना। कुछ बच्चों द्वारा लकड़ी काटकर लाना बताया गया। कुछ बच्चों द्वारा बताया गया कि उनका पूरा परिवार ही कपास बीनने के लिए चला जाता है। बच्चों से बात करने पर पता चला कि प्रत्येक काम के लिए दी जाने वाली मजदूरी भी अलग–अलग थी। जैसे किसी को एक दिन के 200 रुपये, किसी को 300 रुपये, तथा किसी–किसी को 350 या 400 रुपये भी मिल रहे थे। फिर परिवार के सदस्यों द्वारा प्राप्त की जाने वाली मजदूरी के आधार पर ही गणित के जोड़, घटाना, गुणा तथा भाग के कुछ इबारती प्रश्न, तालिका पर आधारित प्रश्न तथा कुछ गणित पहेलियां भी बनायीं गयी। फिर बच्चों के साथ मिलकर इन प्रश्नों तथा पहेलियों को सुलझाने का प्रयास किया गया।

अब हमारे समक्ष अगला प्रश्न यह था कि इस प्रक्रिया का उपयोग बच्चों को भाषा सिखाने में किस प्रकार किया जाये? इसके लिये बच्चे दिनभर जो कुछ भी देखते हैं अथवा करते हैं उसके आधार पर उन्हें अपने शब्दों में एक–एक कहानी लिखने को कहा गया। बच्चों द्वारा लायी गयी कहानियां देखने पर हमें यह भी पता चला कि उनके घर में होने वाली घटनाओं का उनके मन मस्तिष्क पर क्या प्रभाव पड़ता है? उनके द्वारा लायी गयी कहानियां एक प्रश्न को जन्म दे रही थीं कि घर के कार्यों व पुरुषों व घर के अन्य सदस्यों द्वारा महिलाओं की मदद क्यों नहीं की जाती?

यह सारी जानकारी एकत्र करते समय मेरे द्वारा यह पाया गया कि बच्चे अपने आस–पास होने वाले क्रिया–कलापों को लेकर बहुत जागरूक होते हैं। उनके परिवेश में जो कुछ भी चल रहा होता है वह उससे सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर स्वयं देने में सक्षम होते हैं।

अन्य विद्यालयों से आए हुए शिक्षक तथा शिक्षिकाओं द्वारा बच्चों से उनके कार्य से सम्बन्धित प्रश्न पूछे गए जिनके उत्तर बच्चों ने स्वयं दिए। जिस उद्देश्य से इस विषय का चुनाव किया गया था। अंत में काफी हद तक हम उस उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल हो पाए। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान हमने यह देखा कि बच्चों के लिए यह एक नया अनुभव था तथा उन्होंने बहुत उत्साह के साथ इस काम को पूरा किया।

(लेखिका रा.प्रा.वि. ढिमरी ब्लॉक, गदरपुर, उधमसिंह नगर में अध्यापिका के पद पर हैं)